

मार्च 1929 की आर्थिक मंदी निवारण के व्यापक प्रयास हुए

द्वारा 1929 की आर्थिक मंदी निवारण के लिए अमेरिका की सरकार द्वारा कुछ महत्वपूर्ण उपाय किए गए जो निम्नलिखित हैं: -

(1) मुद्रा प्रणाली का सुधारण: - अमेरिकी कुछ आर्थिकशास्त्रियों का सुझाव था कि मंदी का प्रमुख कारण मुद्रा प्रणाली में दोष था। अतः आर्थिकशास्त्रियों ने मुद्रा के सुधार करने के लिए सरकार को प्रोत्साहित किया। उन्होंने पौलों के सिक्कों को अपने लक्ष्य तब तक कागजी मुद्रा की बदलने की मांग की। उन्होंने वर्ण भाग्य के आधार पर डॉलर में पौलों की मात्रा कम करने का प्रस्ताव दिया जिसके फलस्वरूप डॉलर के अनुपात में पौलों के दामों में वृद्धि होती होगी इसी प्रकार अन्य मुद्राओं का सुधार भी करा गया।

राष्ट्रपति हूवर की नीति: - राष्ट्रपति हूवर ने आर्थिक मंदी के निवारण के लिए कांग्रेस के सामने कई प्रयोगों को रखा जिसमें पहला यूरोपीय राष्ट्रों की मांगों को संतुष्ट करना द्वारा प्रदान किया जाता था। उस पर वर्तमान में रोक लगा दी गई। दूसरा जब तक मंदी के सरकारी व्यय में वृद्धि क्योंकि सुनिश्चित होने से बेरोजगारी समाप्त हो जायेगी उद्योगों के कल्याण हेतु फेडरल रिजर्व निगम की प्रयोग प्रस्ताव की अक्टूबर 1929 ई में हूवर द्वारा कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाकर अपनी मांगों को उनके सामने रखा जो इस प्रकार थे: -

(क) कृषि बाजार अप्रतिष्ठान बनाकर कृषि कार्यकर्ताओं को बचाया जाये।

(ख) आठ सदस्यों का एक कृषि पार्षद का गठन कर समस्याओं का समाधान किया जाए।

(ग) भूखानों में स्थित होने के लिए बाजार प्रतिष्ठानों को प्रदान प्रदान किया जाए जिससे वे अपनी आर्थिक समस्याओं को सुलझ सकें।

(घ) निगमों की स्थापना की जाए।

(ङ) हूवर द्वारा 1932 ई में रिजर्व निगम की स्थापना की मांग।

कांग्रेस द्वारा स्वीकृत व स्थापित - (1) आर्थिक संशोधन के बाद कांग्रेस द्वारा हूवर की प्रयोगों को स्वीकार कर लिया गया तथा सभी प्रयोगों पर पूर्ण रूप से संचालित की गयी।

(2) पुनर्निर्माण विनियमन द्वारा कार्योपार्जक प्रयोगों में प्रदान प्रदान किया गया जिसका उद्देश्य बेरोजगारी समाप्त करने से बचा गया।

(3) कांग्रेस द्वारा बेरोजगारों को रोजगार की व्यवस्था

इस राज्य और नगरपालिकाओं संस्थाओं के साथ-साथ-कुलीर-उद्योग
के लिए धन की आवश्यकता की गयी।

(i) मेडल-बैंक द्वारा अनिश्चित-उद्धारकारी करने की आवश्यकता
की गयी। (ii) इनके आर्थिक को दबाव में रखते हुए यूरोपीय राष्ट्यों
को प्रभाव देना बन्द कर दिया। (iii) लोन और फंडों द्वारा लोगों को
मकान के लिए प्रभाव देने की आवश्यकता की गयी। (iv) 1932 ई के
एक अधिनियम के द्वारा ग्राम में निवेशका लायू कर दी गयी।
मिलके इस औद्योगिक-संस्थाओं में मजदूरों को इसका पुरस्कार
लगा दी। कोई भी मजदूर बिना कारण के मजदूरी करना नहीं छोड़
सकता था।

(2) औद्योगिक-संस्थाओं का जमा: - देखा जा रहा है कि आर्थिक-
मंदी का प्रभाव पूरे विश्व पर देखने को मिलता है जिसके माल-वस्तु सभी
देशों में समान-प्रमाणों में जमा ले लिया गयी है। नौगोवाट व
इसमें मासिक-। संयुक्त राज्य अमेरिका में भी मार्च-अप्रैल-
मासक सामग्री के दल 1930 ई के सामग्री के दल
का गठन हुआ जो 1932 ई तक ही चलता रहा। समस्त दुनिया
में प्रेषित वस्तुओं और व्यापार पर 1932 ई. का गठन के मंदी
में मासिक दल का वर्धन बगैरहा इन दोनों के औद्योगिक-विचारों
से जगता में यह तो विश्वास होगा कि संकट के समय सरकार को
को हो सकेगा उठाये जायें।

(3) फ्रेकलिन डी रूजवेल्ट के प्रभाव: - सरकार के द्वारा
आर्थिक मंदी निवारण के सभी प्रयासों में लगाना कुछ ही समय में
1932 ई में देश में बेकार लोगों की संख्या लगभग 1 करोड़ 10 लाख
तक पहुच गयी थी लगभग 50 हजार औद्योगिक-संस्थाओं पर दल
लगा गये। मंदी का को स्थिति संकटपूर्ण होगी। राष्ट्रीय काम
में भागे सभी आर्थिक के कारण लोगों में असंतोष व्याप्त होगा।
इस संयुक्त-राज्य अमेरिका की जगता-सरकार के परिवर्तन की सौच-
रही थी।

अतः 1932 ई के राष्ट्रपति के चुनाव में डेव्ही डेमोक्रैटिक दल
के फ्रेकलिन डी रूजवेल्ट को जीती बहाल से राष्ट्रपति बनाना गम
जिसमें आर्थिक मंदी के निवारण हेतु को सके उठाये गए। रूजवेल्ट
ने रिलीज और रिकवरी वगैरह पुनर्निर्माण की नीति अपनाकर कुछ
हफ्ते तक आर्थिक स्थिति की गिरावट में कमी की। उसके बाद
मालिक मजदूरों के बीच समन्वय व सहयोग की भावना को
विकसित करने का प्रयास किया।

अतः रूजवेल्ट ने आर्थिक क्षेत्र में लक्ष्यवाद के
सिद्धांत को अपनाकर आर्थिक मंदी को दूर करने का प्रयास किया।